चतुर्थः पाठः

वनस्पतिपरिचयः

{इस पाठ में हमारे दैनिक जीवन से सम्बद्ध कुछ वनस्पतियों का पद्यात्मक परिचय दिया गया है। ये अत्यन्त उपयोगी वनस्पति हैं। इन्हें ग्रामवासी तो प्रायः प्रतिदिन देखते हैं किन्तु नगरवासियों को इनका वनस्पति-रूप प्रायः प्राप्त नहीं होता। कुछ लोग अवश्य ही अपने उद्यानों में इन पेड़-पौधों को सौन्दर्य तथा उपयोगिता की दृष्टि से लगाए रहते हैं। इन वनस्पतियों में कुछ वृक्षाकार हैं तो कुछ छोटे पौधे के रूप में हैं। जैसे नीम, आँवला और बेल वृक्षाकार हैं किन्तु तुलसी, हल्दी, अदरख तथा घृतकुमारी छोटे पौधों के रूप में होते हैं। इनकी विशेषताएँ ध्यान देने योग्य हैं।}

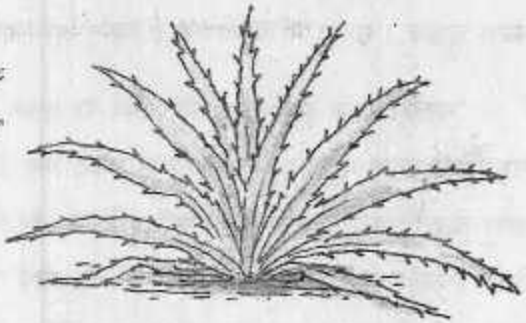

1. तुलसी – हरित्पर्णमयी वृन्दा मञ्जरीभिरलङ्कृता ।
   ज्वरकासादिशमनी तुलसी वन्दिता सदैः ॥
2. निम्बः – लम्बपर्णो गदं हन्ति काले याति विशालताम् ।
   तिक्तास्वादो लघुफलो निम्बः सुरभिपुष्पवान् ॥
3. आमलकी – त्रिदोषनाशिनी केशकृष्णिका स्वफलेन या ।
   अवलेहेन शक्तेश्च वर्धिन्यामलकी मता ॥

4. हरिद्रा – पीतवर्णा ग्रन्थिरूपा कृमिघ्ना व्रणघातिनी ।

सर्वत्र शुभकार्यार्थी हरिद्रा स्वादवर्धिनी ॥

5. बिल्वम् – पर्णत्रयमयी शाखा तत्पफलं कन्दुकोपमम् ।

नानारोगविनाशे च क्षमं बिल्वं बहुप्रियम् ॥

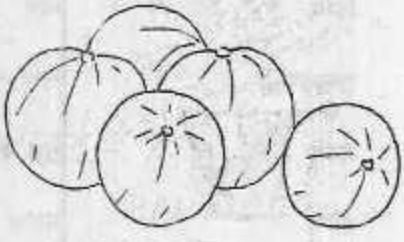

6. आर्द्रकम् – सर्वत्र लभ्यं सूपादौ स्वादाय परिकल्पते ।

कासादिनाशकं ग्रन्थिहरिद्राकारमार्द्रकम् ॥

7. घृतकुमारी – एलोबेरेतिविख्याता नानारोगप्रणाशिनी ।

शक्तिदात्री मृदुर्ग्राह्या सेव्या घृतकुमारिका ॥

शब्दार्था :

हरित्पर्णमयी	–	हरी पत्तियों वाली
वृन्दा	–	तुलसी
मञ्जरीभि:	–	मञ्जरियों से
अलङ्कृता	–	सुसज्जित
ज्वरकासादिशमनी	–	ज्वर (बुखार), खाँसी आदि को दूर करनेवाली
वन्दिता	–	वन्दनीया, पूजनीया
सभै:	–	सब के द्वारा
निम्ब:	–	नीम
लम्बपर्ण:	–	लम्बे पत्तों वाला
गदम्	–	रोग को
हन्ति	–	मारता है
याति	–	जाता है, प्राप्त करता है
विशालताम्	–	विशालता (बड़े आकार) को
तिक्तास्वाद:	–	तीखे (कड़वे) स्वाद वाला
लघुफल:	–	छोटे फल वाला

सुरभिपुष्पवान्	–	सुगन्धित फूल वाला
आमलकी	–	आँवला
त्रिदोषनाशिनी	–	त्रिदोष (वात, पित्त, कफ) को शान्त करने वाली
केशकृष्णिका	–	केश (बाल) को काला करनेवाली
स्वफलेन	–	अपने फल से
अवलेहेन	–	चाटकर खाये जाने (से)
शक्तेश्च	–	और, शक्ति का
वर्धिन्यामलकी	–	(वर्धिनी+आमलकी) बढ़ानेवाली, आँवला
हरिद्रा	–	हल्दी
पीतवर्णा	–	पीले रंग वाली
ग्रन्थिरूपा	–	गाँठ के रूप की
कृमिघ्ना	–	कीटाणुनाशक
व्रणघातिनी	–	घाव भरने वाली, घाव को समाप्त करनेवाली
सर्वत्र	–	सभी जगह
शुभकार्यार्था	–	शुभ कार्य में प्रयुक्त होनेवाली
स्वादवर्धिनी	–	स्वाद बढ़ानेवाली

बिल्वम्	–	बेल का फल
पर्णत्रयमयी	–	तीन पत्तों वाली
तत्फलम्	–	उसका फल
कन्दुकोपमम्	–	गेन्द के समान
नानारोगविनाशे	–	अनेक प्रकार के रोगों के नाश में
क्षमम्	–	सक्षम, समर्थ
आर्द्रकम्	–	अदरख
लभ्यम्	–	उपलब्ध, प्राप्त होने योग्य
सूपादौ	–	सूप आदि में
परिकल्पते	–	कल्पना की जाती है, समझा जाता है
कासादिनाशकम्	–	खाँसी आदि नष्ट करनेवाला
घृतकुमारी	–	घृतकुमारी (ऐलोवेरा)
विख्याता	–	प्रसिद्ध है
नानारोगप्रणाशिनी	–	अनेक प्रकार के रोगों को नष्ट करनेवाली
शक्तिदात्री	–	शक्ति प्रदान करनेवाली
मृदुर्ग्राह्या	–	कोमल तथा उपयोगी
सेव्या	–	सेवन करने योग्य

व्याकरणम्

सन्धिविच्छेदः

मञ्जरीभिरलङ्कृता	=	मञ्जरीभिः + अलङ्कृता (विसर्गसन्धिः)
तिक्तास्वादः	=	तिक्त + आस्वादः (दीर्घसन्धिः)
शक्तेश्च	=	शक्तेः + च (विसर्गसन्धि)
वर्धिन्यामलकी	=	वर्धिनी + आमलकी (यण्सन्धिः)
कन्दुकोपमम्	=	कन्दुक + उपमम् (गुणसन्धिः)
सूपादौ	=	सूप + आदौ (दीर्घसन्धिः)
एलोबेरेतिविख्याता	=	ऐलोबेरा + इतिविख्याता (गुणसन्धिः)

प्रकृति – प्रत्यय विभागः

कृता	=	$\sqrt{कृ}$ + क्त, स्त्री०, एकवचनम्
वन्दिता	=	$\sqrt{वन्द्}$ + क्त, स्त्री०, एकवचनम्
याति	=	$\sqrt{या}$, लट् लकार, प्रथमपुरुषः, एकवचनम्
पुष्पवान्	=	पुष्प + मतुप्, प्रथमा एकवचनम्, पुं०
वर्धिनी	=	$\sqrt{वृध्}$ + णिनि + ङीप्, स्त्रीलिङ्गम्
परिकल्पते	=	परि + $\sqrt{कल्प}$ + लट्लकारः आत्मनेपदी
ग्राह्या	=	$\sqrt{ग्रह्}$ + ण्यत् + टाप्
सेव्या	=	$\sqrt{सेव्}$ + ण्यत् + टाप्
लभ्यम्	=	$\sqrt{लभ्}$ + यत्, नपुं
शक्तिदात्री	=	शक्ति + $\sqrt{दा}$ + तृच् + ङीप्,स्त्रीलिङ्गम्

मौखिकः

1. अधोलिखितानां पदानाम् उच्चारणं कुरुत–

हरित्पर्णमयी, ज्वरकासादिशमनी, तिक्तास्वादः, सुरभिपुष्पवान्, केशकृष्णिका, पर्णत्रयमयी, कन्दुकोपमम्, ग्रन्थिहरिद्राकारमार्द्रकम्, एलोबेरेतिविख्याता ।

2. निम्नलिखितानां पदानाम् अर्थं वदत–

निम्बः, आमलकी, हरिद्रा, बिल्वम्, आर्द्रकम्, घृतकुमारी, सर्वत्र, कासादिनाशकम्, लम्बपर्णः, पीतवर्णा ।

3. निम्नलिखितस्य पद्यस्य पाठं कुरुत–

लम्बपर्णो गदं हन्ति काले याति विशालताम् ।
तिक्तास्वादो लघुफलः निम्बः सुरभिपुष्पवान् ॥

लिखितः

1. पाठानुसारेण अधोलिखितानां प्रश्नानां उत्तरम् एकपदेन लिखत–

(क) कस्य फलं कन्दुकोपमम् ?

(ख) का पीतवर्णा अस्ति ?

(ग) का एलोबेरेति विख्याता ?

(घ) त्रिदोषनाशिनी केशकृष्णिका च का अस्ति ?

(ङ) कः लम्बपर्णः अस्ति ?

(च) कस्य शाखा पर्णत्रयमयी भवति ?

2. पाठ के आधार पर आँवला से क्या लाभ होते हैं ? लिखें

3. उचितं पदं चित्वा पूरयत–

(क) कासादिनाशकं ग्रन्थिहरिद्राकारम् _____। (आर्द्रकम्, बिल्वम्)

(ख) सर्वत्र शुभकार्यार्थी _____ स्वादवर्धिनी । (आमलकी, हरिद्रा)

(ग) ज्वरकासादिशमनी _____ वन्दिता सभै: । (घृतकुमारी, तुलसी)

(घ) तिक्तास्वादो लघुफल: _____ सुरभिपुष्पवान् । (ग्रीष्मे, शीते)

4. सन्धिं कुरुत–

(क) तिक्त + आस्वाद: = _____ ।

(ख) शक्ते: + च = _____ ।

(ग) सूप + आदौ = _____ ।

(घ) मञ्जरीभि:+अलङ्कृता = _____ ।

(ङ) वर्धिनी + आमलकी = _____ ।

5. सुमेलनं कुरुत

(क) तुलसी	(i) केशकृष्णिका
(ख) आमलकी	(ii) लम्बपर्ण:
(ग) हरिद्रा	(iii) वृन्दा
(घ) बिल्वम्	(iv) एलोबेरेति
(ङ) निम्ब:	(v) पर्णत्रयमयम्
(च) घृतकुमारी	(vi) पीतवर्णा

6. निम्नलिखितपदानां पुंल्लिंगरूपाणि लिखत –

यथा – पीतवर्णा – पीतवर्णः

(क) शक्तिदात्री – _____ ।

(ख) पर्णत्रयमयी – _____ ।

(ग) त्रिदोषनाशिनी – _____ ।

(घ) व्रणघातिनी – _____ ।

(ङ) वन्दिता – _____ ।

योग्यताविस्तारः

आधुनिक युग में वनस्पति-शास्त्र एक पृथक् विज्ञान के रूप में पढ़ा-पढ़ाया जाता है। इसमें सभी प्रकार के पेड़-पौधों, लताओं तथा पानी में होने वाले वनस्पतियों का भी सूक्ष्म विश्लेषण होता है । प्राचीन भारत में यह शास्त्र निघण्टु तथा वृक्षायुर्वेद-इन दो पृथक् शास्त्रों के रूप में पढ़ा जाता था । निघण्टु वनस्पतियों को पहचानने तथा उनके पर्यायवाची शब्दों से जुड़ा था जबकि वृक्षायुर्वेद का क्षेत्र बहुत व्यापक था । पेड़-पौधों के अंग-प्रत्यंग की जानकारी तथा उनकी जड़ (मूल) से लेकर पत्तों, फूलों और फलों तक के गुण-दोष इसके अन्तर्गत जाने जाते थे । इसके साथ ही पेड़-पौधों में लगने वाली बीमारियों तथा उनके निराकरण की शिक्षा भी इसी शास्त्र के अन्तर्गत थी । अमरकोश में अमरसिंह ने वृक्षों के नामों का विस्तृत उल्लेख "वनौषधि" वर्ग में किया है ।

संस्कृत भाषा में "ओषधि" शब्द सामान्य वनस्पति के लिए है । इसकी व्युत्पत्ति से

ज्ञात होता है कि सभी वनस्पति ओष अर्थात् ऊष्मा, ऊर्जा या शक्ति को धारण करते हैं। उनसे बने हुए "भेषज" (दवा) को "औषधम्" कहते हैं। इस प्रकार वनस्पतियों से दवा बनाने का कार्यक्रम वैद्यों के द्वारा होता था। कुछ ओषधियों अर्थात् वनस्पतियों को हम आज के दैनिक जीवन में बहुत उपयोगी पाते हैं। न केवल पर्यावरण की शुद्धि के लिए अपितु अपने भोजन आदि में प्रयोग के लिए भी इनकी महत्ता हम स्वीकार करते हैं। इन्हें आस-पास के उद्यानों में तथा कुछ को तो घर में भी गमले आदि में लगाना शोभाजनक है।

◆◆◆